काशीकान्त मिश्र 'मधुप'

काशीकान्त मिश्रक उपनाम छल - मधुप। एही उपनामसँ ई साहित्य संसारमे प्रसिद्ध छथि। हिनक जन्म भेल छलनि 2 अक्टूबर, 1906 ई. मे। पैतृक छलनि कोइलख, मुदा ई अपन मातृक (कोर्थु, दरभंगा) मे बसि गेल छलाह। संस्कृतक विद्यार्थी रूपमे ई व्याकरण तथा साहित्य विषयमे आचार्य कयलनि, वेदान्तमे शास्त्री। जयानन्द उच्च विद्यालय, बहेड़ा (दरभंगा) मे संस्कृत शिक्षकक पद पर सैंतीस वर्ष रहलाह। हिनक मृत्यु 20 दिसम्बर, 1987 कऽ भेलनि।

मधुपजीक साहित्य-रचनाक एकमात्र विधा छल कविता। ओ गद्य कहियो नहि लिखलनि। व्यक्तिगत चिट्ठी-पत्री सेहो पद्यमे लिखथि। तेँ हिनका 'कवि चूड़ामणि' क उपाधि भेटल छलनि। सामाजिक दायित्व - बोधसँ प्रेरित भऽ ई काव्य-लेखन शुरू कयलनि। उनैसम शताब्दीक पाँचम दशकमे मैथिली भाषा पर अनेक प्रकारक प्रहार भऽ रहल छल। एहिमे प्रमुख छल मिथिलामे मैथिली-गीतक अपेक्षा हिन्दी सिनेमाक गीतक बढ़ैत प्रभाव। मधुपजी एहि तथ्यकेँ गमलनि। साकांक्ष भेलाह। हिन्दी सिनेमाक तथा अन्य लोक-गीतक भास पर जमि कऽ गीत लिखलनि। अपूर्व रसगुल्ला, टटका जिलेबी, पचमेर, चौंकि चुप्पे, बोलबम आदि एही वैचारिकताक गीत - पोथी अछि।

किन्तु, मधुपजी दोसरो प्रकारक काव्य- रचना कयलनि अछि। झंकार, शतदल, मधुप सप्तशती, द्वादशी, प्रेरणा पुंज आदि कविता संग्रहमे हिनक लोकधर्मी दृष्टिकोणक संग पाण्डित्य सेहो मुखर अछि। 'घसल अठन्नी' हिनक एही कोटिक लोकप्रिय कथा-काव्य अछि। एहि सभक अतिरिक्त हिनक 'राधा-विरह' महाकाव्य अछि जाहि पर हिनका साहित्य अकादमी पुरस्कार भेटल छनि।

काव्य सन्दर्भ - 'भावि भरदुतिया विधान हे ' पहिल बेर चौंकि चुप्पेमे छपल छल जे बादमे प्रसंगवश 'प्रेरणापुञ्ज' मे सेहो संकलित भेल। एहि कवितामे मिथिलाक भरदुतिया पावनिक वर्णन आ ताहि माध्यमसँ भाइ-बहिनक स्नेह-भावक प्रगाढ़ताक उल्लेख अछि। भरदुतियामे भाइक नहि आयब बहिनक लेल कतेक पीड़ादायक होइत अछि, तकर अभिव्यक्ति अत्यन्त सरल आ मार्मिक ढंगसँ कवि कयलनि अछि।

भावि भरदुतिया विधान हे

नीपि झलकौलेँ घर-अङना दुअरिया
भावि भरदुतिया विधान हे
अरिपन द' पीढ़ी द्यौरि क' रखलिऐ
भैयाकेँ नोतब दय पान हे
यमुना नोतल यम, हम नोती भैया
चाही नहि सोना-चानी, चाही ने रुपैया
या धरि यामुन जल, जीवऽ वर माङि क'
फाँफर फोलब मखान हे
मनक मनहि रहि गेल सब बतिआ
केहन कठोर भेल भैआकेर छतिया
दोष न हुनक, बिनु मायक नैहरबा
भौजिओक हृदय पखान हे
सुनिते साइकिल - घंटी, पाँखि बिनु आँखिया
दौड़य सड़क दिशि, कते बेर सखिया
सुरूज डुबैत भैआकेर ताकि बटिआ
बहि गेल कमला - बलान हे
भटवर तिलकोर कथी ले' तरलिऐ
दही पौड़ि गोटा दूध किए ओरिऔलिऐ
दिऐ उलहन हँसि-हँसि कऽ ननदिआ
भेल मन 'मधुप' मलान हे।

शब्दार्थ

भावि : भावना कऽ, विचारि

भरदुतिया : भाइ-बहिनक पावनि, भ्रातृ द्वितीया

अरिपन : पिठारसँ पीढ़ी/ देवार/ भूमि पर सिनूर दऽ बनाओल चित्र

पीढ़ी : काठक बनायल बैसबाक वस्तु

द्योरि : पिठार/ चूनसँ रङि कऽ

नोतब : नेओत देब, निमन्त्रण देब

फाँफर : फाँड़क धोतीसँ बनाओल धोकरी

मखान : एकटा खाद्य वस्तु जे पानिमे उपजैत अछि।

पखान : पाथर , पाषाण

गोटा दूध : औंटैत- औंटैत खूब गाढ़ भेल दूध

प्रश्न ओ अभ्यास

1. वस्तुनिष्ठ प्रश्न -

(i) 'भावि भरदुतिया विधान हे' केर रचयिता छथि -

(क) काशीकान्त मिश्र 'मधुप' (ख) चन्द्रभानु सिंह

(ग) वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' (घ) उदय चन्द्र झा 'बिनोद'

(ii) काशीकान्त मिश्र 'मधुप' क कविताक शीर्षक अछि

(क) वन्दना (ख) भावि भरदुतिया विधान हे

(ग) एड्सक कालनाग (घ) जय जवान : जय किसान

2. रिक्त स्थानक पूर्ति करू :

(i) नीपि झलकौलेँ ..... दुअरिया।

(ii) सुनिते साइकिल घंटी पाँखि ..... अँखिआ।

3. शुद्ध / अशुद्ध वाक्यकेँ चिन्हित करू :

(i) भुरदुतियामे अरिपन दऽ पीढ़ी ढौरि कऽ राखल जाइत अछि।

(ii) भरदुतिया पावनिमे घर-अङना नहि नीपल जाइत अछि।

4. लघूत्तरीय प्रश्न-

(i) भरदुतिया पावनिमे किनका नोतल जाइत छनि ?

(ii) नोतबाक की विधान अछि ?

(iii) बहिन भाइ लेल की वर मँगैत छथि ?

(iv) भैयाक स्वागत लेल की-की ओरियान बहिन कयनै छलथिन ?

(v) भैयाक नहि अयला पर उलहन के देलथिन ?

5. दीर्घोत्तरीय प्रश्न -

(i) 'भावि भरदुतिया विधान हे' कविताक भाव स्पष्ट करू।

(ii) पठित कविताक आधार पर भाइ-बहिनक पावनिक वर्णन करू।

(iii) भैयाक नहि अयला पर बहिनक स्थितिक वर्णन करू।

(iv) पठित कवितामे बहिनक नैहरक प्रति भावक वर्णन करू।

(v) भरदुतिया पावनि भाइ-बहिनक स्नेहक पावनि थिक स्पष्ट करू।

गतिविधि-

1. भरदुतिया पावनि पर एकटा संक्षिप्त निबन्ध लिखू।
2. एहि पाठमे मिथिलाक संस्कृति पर चर्चा कयल गेल अछि - एहिपर आपसमे चर्चा करू।
3. नोत लेबाक कालक गीत स्मरण हो तँ गावि कऽ सुनाउ।
4. 'मनक मनहि रहि गेल सब बतिआ
   केहन कठोर भेल भैआकेर छतिया
   दोष न हुनक, बिनु मायक नैहरबा'
   उपर्युक्त पाँतीक संप्रसंग व्याख्या करू -
5. एहि कविताकेँ कंठस्थ करैत सस्वर पाठ करू।

निर्देश -

1. भरदुतियाक अवसर पर गाओल गेल गीतसँ शिक्षक छात्रकेँ परिचित कराबथि।
2. भरदुतिया पावनि पर गाओल गेल आनोआन पारम्परिक गीतसँ छात्रकेँ अवगत कराबथि।
3. शिक्षक छात्रकेँ भरदुतिया पावनिक दिनक विधि विधानसँ परिचित कराबथि।
4. भाइ-बहिनक अटूट स्नेह सम्बन्धक प्रतीक पावनि भरदुतियाक महत्त्वक चर्चा शिक्षक छात्रकेँ कराबथि।